International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 7, November-December 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

धर्म का व्यवसायीकरण अंजू दुआ जैमिनी की कहानियों में

डॉ. नरेंद्र कुमार

प्राध्यापक हिन्दी, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, पिपलथा, जींद

शोध आलेख सार

धर्म श्रद्धा का विषय है। सभी धर्मों के अंदर समता और एकता होती है। जो लोक कल्याण के लिए सहायक सिद्ध होती है। धर्म के अन्दर प्रत्येक व्यक्ति की आस्था होती है। धर्म में हमारे संस्कार, मूल्य, परम्परा, कर्तव्य, सेवा भावना आता आदि सभी शामिल होते हैं। लेकिन वर्तमान समय में धर्म का स्वरूप बदल गया है। आज धर्म एक व्यवसाय बनकर रह गया है। वर्तमान समय में भले ही कबीर भक्ति को अपनाया जा रहा हो, लेकिन कबीर शिक्षा अब मात्र व्यवसाय बन गई है। अंजु बी ने अपनी कहानियों के माध्यम से इसे बखूबी दर्शाया है। आज हमारे धर्म में कर्मकाण्डों, बाह्य आडम्बरों को बखूबी देखा जा सकता है मनुष्य का प्रमुख धर्म अच्छा कर्म करना होता है। हमें धर्म गुरुओं से खुद को ओरों को भी बचाना होगा, तभी वास्तविक धर्म रह सकता है। भक्तिकाल जैसी भक्ति अब नहीं रही। आज धर्म में आडम्बर ज्यादा आ गए है। धर्म के नाम पर ढोंग होने लगे है। पहले मन्दिर का पुजारी भगवान के बराबर होता था, लेकिन आज हम देखते हैं कि एक मन्दिर का पुजारी भी व्यवसायिक तौर पर मन्दिर में रहता है। वह तन्ख्वा पर रहता है। यही कारण यह कि आज धर्म भी एक व्यवसाय बनकर रह गया है।

How to cite this paper: Dr. Narendra Kumar "Commercialization of Religion in the Stories of Anju Dua Jaimini" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-7, December 2022, pp.269-270, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd52303.pdf

IJTSRD52303

Copyright © 2022 by author (s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

धर्म के व्यवसायीकरण के प्रति विमर्श:

अंजू दुआ जैमिनी की कहानियों में धर्म के व्यवसायिकरण को बखूबी दर्शाया गया है। व्यवसाय के इस दौर में धर्म को भी नहीं छोड़ा गया। आज धर्म को भी व्यवसाय के रूप में अपनाया जा रहा है। आज हम देख सकते हैं कि जितने बड़े - बड़े मंदिर होते हैं उनके ठेके छूटने लगे हैं। ठेकेदार उन मंदिरों के संचालक बन गये है। दान - पात्र में जो पैसा इकट्ठा होता है, उसका बंटवारा किया जाता है। जो चढ़ावा चढ़ाया जाता है उसे बेच दिया जाता है। इतना ही नहीं जो पुजारी मंदिरों में रहते हैं वे लाखो - करोड़ों रुपए कमा रहे है और मंदिर के बाहर विकलांग लोगों को बैठाकर उनसे भीख मांगवाने का कार्य भी ये धर्म के ठेकेदार ही करते है। इसी कारण आज कभी - कभी आस्था की जगह देवी - देवताओं में हमारी अनास्था हो जाती है। धर्म के नाम पर ढोग ज्यादा होने लगे हैं। जिससे आम आदमी का विश्वास उठने लगा है। आज के मनुष्य के आस्तिक नास्तिक होने का मुख्य कारण इसे हो कहा जा सकता है।

अंजू जी ने अपनी कहानी 'झुनझुना बजाए रहो 'में इस तथ्य को बखूबी उजागर किया है। इस कहानी में धर्मेन्द्र और रामदीन आपसी बातें करते है। रामदीन जाति से पंडित है वह धर्मेन्द्र को पंडितो की महिमा के बारे में बताता है कि पंडितों के पास कितना माल आता रहता है। उन्हें कोई अन्य कार्य करने की आवश्यकता भी नहीं पड़ती। वह कहता भी है -

'मथुरा में म्हारे दादा मंदिर में बड़े पुजारी भयौ। आ ... हा ... क्या जमान था सब आगे - पीछे घूमे थे उनके खूब तर माल आयो करे था हमरे घरे देसी घी में तर परांठे, सब्जियां, दूध - फल, आ हा क्या जमाना था।

इस प्रकार रामदीन दान दक्षिणा का बखान करता है वह बताता है कि मंदिरों के पुजारियों को किसी भी तरह की कोई कमी नहीं होती। खाना, पैसा, कपड़े, लत्ते उनको खूब मिलता है। फिर उन्हें भला कमाने की क्या आवश्यकता है। आज धर्म के ठेकेदारों के कारण धर्म का स्वरूप ही बदल गया है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व शिक्षण संस्थाओं में धर्म के नाम पर खूब व्यवसाय चलने लगा धर्म की जगह पाखण्ड व भाग्यवादिता ने ग्रहण कर ली है। मनुष्य स्वयं पर विश्वास न करके इन धर्म के ठेकेदारों पर विश्वास करने लग गया है। इन ढोंगी गुरुओं के कारण ही आज मनुष्य आस्था - अनास्था के जाले में फंसा हुआ है कभी उसे परमात्मा में विश्वास हो जाता है, तो कभी उसे यह सब पाखण्ड लगने लग जाता है। लेखिका का मानना है कि आशावादी विचारधारा ही व्यक्ति को सफलता की ओर लेकर जाती है हमें धर्म के व्यवसायीकरण को पहचानना होना तभी हमारी सच्ची श्रद्धा बनी रह सकती है।

आज धर्म एक व्यवसाय बनकर रह गया है। लोग मंदिरों को कमाई का साधन बनाने लगे हैं बिना किसी कारण के कहीं भी

किसी नये मंदिर की स्थापना हो जाती है। केवल आमदनी के लिए। यही कारण है कि आज मनुष्य का कभी - कभी तो देवी - देवताओं में अटूट विश्वास हो जाता है और कभी - कभी उसका विश्वास इनसे इतना उठ जाता है कि वह अपना श्रद्धा भाव ही खो बैठता है। लेखिका ने अपनी कहानियों के माध्यम से दर्शाया है कि धर्म के नाम पर अनेक पाखण्ड होने लगे हैं। कभी राम के नाम पर चंदा इकट्ठा किया जाता है, कभी धर्म के नाम पर कोई मुहिम चलाई जाती है तो कभी धर्म के नाम पर, पैसा कमाने के लिए नया मंदिर बनाया जाता है। आज धार्मिक स्थलों के भी टेंडर छूटने लगे हैं, बोलियाँ लगाई जाती है। यही कारण है कि आज मनुष्य आस्तिक - नास्तिक बनकर रह गया है। कभी वह मंदिरों में विश्वास करने लगता है, कभी उसका विश्वास तार - तार हो जाता है। न जाने कितनी बार मंदिर के पुजारियों की अश्लीलता को खबरें आती रहती है।

आज धर्म के नाम पर अनेक गुरु बन गये है जो भोली - भाली जनता को गुमराह कर रहे हैं। ये अपने आपको सच्चे गुरु का दर्जा देते हैं और कहते है कि यदि सच्चा ज्ञान प्राप्त करना है तो गुरु का होना बहुत ही आवश्यक है। गुरु अत्यंत डोंगी, फरेबी होते है। धर्म गुरु बनकर ये अपना व्यापार खूब चलाते हैं। करोड़ों की संपत्ति जमा कर लेते हैं। इतना ही नहीं श्रद्धा के नाम भी खूब फँसाते हैं। अपना शारीरिक शोषण करते हैं। जनता को मूर्ख बनाना ये बखूबी जानते हैं। इनमें से कई गुरुओं का तो तो पर्दाफाश भी हो गया है, लेकिन भोली - भाली जनता भी अपनी आंखें खोलना नहीं चाहती। वह अपना तन - मन - धन व कीमती समय इन झूठे ढोंगी धर्म गुरुओं पर खूब लूटा रही है ।लेखिका ने अपनी कलम से इनके धार्मिक व्यवसाय को उजागर किया।

भारतीय समाज में तन्त्र - मन्त्र का प्रभाव काफी देखा जा सकता है। यहाँ के लोग इनमें पूरा विश्वास व आस्था रखते हैं। यह विश्वास अनपढ़ व पढ़े - लिखे दोनों ही समाजों में बना हुआ है। धर्म के नाम पर ढोंगी गुरु इन मंत्रों का झूठा ज्ञान लेकर भोली - भाली जनता को काबू में कर खूब लूटते हैं। अंजू की कहानियों में इन तथ्यों का उजागर बखूबी किया गया है। भारतीय समाज पूरी तरह धर्म से अंको की कहानियों में इन तथ्यों का जद हुआ है। उसकी समाज में गहरी आस्था है। आज धर्म के ठेकेदार अपना व्यवसाय खूब चला रहे है आम आदमी अपने जीवन के अहम फैसले इन धर्म गुरुओं के कहे पर ही लेते हैं। जैसे से कहते है वैसे ही करते जाते है। अत: आज मंदिर जैसे पवित्र स्थल भी व्यवसाय के केन्द्र बनकर खूब दौड़ रहे है धर्म के नाम पर लोग खूब धन लूटा रहे हैं। इन्हें कोई अन्य व्यवसाय करने की आवश्यकता हो नहीं पड़ती ।

अंधविश्वास एवं झाड़ - फूंक के प्रति विमर्श:

दान - दक्षिणा की अत्यधिकता और कट्टरता के कारण समाज अपने कार्यों की पूर्ति हेतु तंत्र मंत्र जैसे सामनाओं की चपेट में आ गया है। लोग जादू - टोने, तंत्र - मंत्र और ओझे सथाणों में विश्वास करने लगे। जिसके कारण अंधविश्वास निरन्तर बढ़ते गये प्राचीन धर्म व वर्तमान धर्म में काफी अन्तर देखने को मिलता है। आज धर्म के नाम पर पाखण्ड होने लगे हैं। भारतीय समाज में अंधविश्वासों के जाल में फंसता जा रहा है। इन अंधविश्वासों व जादू - टोनों के बारे में अंजू जी ने लिखा है कि

'मम्मी चुपचाप झाड़ - फूंक, गंडे - ताबीज आदि हर उपचार करती। कैसे भी हो, उनका बेटा बुरी पता से छुटकारा पा जाए। दिन - रात आंसुओं की नदी में दूबती और सतह पर तैरतीं।

इस प्रकार इन्होंने अपनी कहानी बाजार में गुम स्वप्निल में यह सब दर्शाया है। जब स्वप्निल नामक लड़का बीमार पड़ जाता है तो उसकी मम्मी उसके होने के लिए न जाने क्या क्या जतन करती। अतः तान्त्रिक मंत्र साधना का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर होता है।

संदर्भ - सूची

[1] अंजु दुआ जैमिनी, सीली दीवार, अनुभव प्रकाशन गाजियाबाद

[2] अंजू दुआ जैमिनी सुलगती जिंदगी के धुएँ मगध प्रकाशन, गाजियाबाद

[3] अंजु दुआ जैमिनी, क्या गुनाह किया, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली

[4] अंजू हुआ जैमिनो, कंक्रीट की फसल कल्याणी शिक्षा, नई दिल्ली

[5] अंजु दुआ जैमिनी, अति से इति, कल्याणी शिक्षा परिषद, नई दिल्ली

[6] भगवानदास वर्मा, कहानी की संवेदनशीलता सिद्धांत और प्रयोग साहित्य प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 1977

[7] वीरेन्द्र जैन, भार्या, बाणी प्रकाशन, 21 - ए. दरियागंज, नई दिल्ली

[8] अंजु दुआ जैमिनी उन्मुक्त उदान अयन प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2019

[9] अंजु दुआ जैमिनी, मोर्चे पर स्त्री, अपन प्रकाशन, दिल्ली

[10] अंजु दुआ जैमिनी, अंत से अनंत, शोध प्रकाशन, जयपुर, प्रथम संस्करण